आर्थिक आयोजन एवं इसके उद्देश्य
Economic Planning & its objectives

आयोजन एक तकनीक, एक साध्य की प्राप्ती का साधन और वह साध्य है, जो केन्द्रीय योजना प्राधिकरण द्वारा निर्धारित किन्ही पुर्वनिश्चित तथा सुस्पष्ट लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को प्राप्त करता है। आर्थिक आयोजन को विभिन्न अर्थशास्त्रीयों ने अलग अलग परिभाषाएं दी है।

प्रो॰ रॉबिन्स के अनुसार "आर्थिक आयोजन उत्पादन तथा विनिमय की निजी क्रियाओं का सामूहिक नियंत्रण का प्रतिस्थापन है।"

हेक के अनुसार आयोजन का अर्थ है "केन्द्रीय प्राधिकरण द्वारा उत्पादकीय क्रिया का निर्देशन।"

डिकन्सन के अनुसार आयोजन का अर्थ है "इस विषय में प्रमुख की आर्थिक निर्णय करना कि किस वस्तु का तथा कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाय, कि कब और कहाँ उत्पादन हो और समस्त अर्थव्यवस्था के व्यापक सर्वेक्षण के आधार पर निर्णायक प्राधिकरण के निर्णय के अनुसार उस उत्पादन को कैसे विभाजित किया जाए।

इसप्रकार यद्यपि इस विषय में अर्थशास्त्रियों का एक मत नही है फिर भी आर्थिक आयोजन का मतलब "समय की एक निश्चित अवधि के भीतर निश्चित लक्ष्यों तथा उद्देश्यों की प्राप्ती के उद्देश्य से केन्द्रीय प्राधिकरण द्वारा अर्थव्यवस्था का आयोजित नियंत्रण तथा निर्देशन है।

भारत जैसे अल्पविकसित देशों में

आयोजन का प्रमुख उद्देश्य आर्थिक विकास की दर को बढ़ाना है, लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा उठाना तथा निर्धनता व आर्थिक असमानताओं को दूर करना है। अतः आयोजन ही ऐसी रणनीति है जिसके द्वारा इन उद्देश्यों की प्राप्ती कर सकते हैं। यह आयोजन की रणनीती इस प्रकार है —

(1) पूँजी निर्माण के लिए — आय, बचत तथा निवेश के स्तर बढ़ाकर पूंजी निर्माण की दर बढ़ाना आयोजन का प्रमुख उद्देश्य होता है। चूंकि अल्प विकसित देशों में पूंजी निर्माण की दर बढ़ाने में अनेक कठिनाइयाँ होती हैं। क्योंकि आय के निम्न स्तरों तथा उपभोग की ऊँची प्रवृत्ति के कारण, उनकी बचत करने की क्षमता बहुत ही कम होती है। परिणामतः निवेश की दर कम रहती है जिससे पूंजी की न्यूनता और कम उत्पादकता के कारण कम होती है। और कम उत्पादकता के कारण कम आय होता है। अतः इस आर्थिक दुश्चक्र को केवल योजनाबद्ध विकास से तोड़ सकता है। अल्पविकसित देशों के सामने दो मार्ग होते हैं। एक विदेश से पूंजी आयात करके योजनाबद्ध विकास और दूसरा बलकृत बचतों के द्वारा।

2. बेरोजगारी दूर करने के लिए — अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में विस्तृत बेकारी तथा अदृश्य बेकारी दूर करने की आवश्यकता के कारण आयोजन की जरूरत और प्रबल होती है क्योंकि इनमें पूंजी दुर्लभ होती है और श्रम की अधिकता रहती है इसलिए निरंतर बढ़ती हुई श्रम-शक्ति को लाभदायक रोजगार के अवसर प्रदान करने की समस्या कठिन बनी रहती है। इस समस्या को केवल एक केन्द्रीकृत आयोजन प्राधिकरण ही सुलझा सकता है

3. संतुलित आर्थिक विकास के लिए — प्रयोग उद्योग एवं उपक्रम के अभाव में अर्थव्यवस्था के संतुलित विकास की योजना बनाने के लिए आयोजन प्राधिकरण ही एकमात्र संस्था हो सकती है। द्रुत आर्थिक विकास के लिए अल्पविकसित देशों को इस बात की आवश्यकता रहती है कि कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्र का विकास हो, सामाजिक तथा आर्थिक सुविधाएं स्थापित की जाएँ। इन सबके लिए विभिन्न क्षेत्रों के एक साथ ही निवेश आवश्यक है, जो केवल विकास आयोजन के अन्तर्गत ही संभव है।

4. सामाजिक एवं आर्थिक उपरि सुविधाओं का

(3)

विकास — सामाजिक तथा आर्थिक उपरि-सुविधाओं के अभाव में कृषि तथा औद्योगिक क्षेत्र विकास नहीं कर सकते। कृषि तथा औद्योगिक विकास के लिए नहरों, सड़कों, रेलमार्गों तथा बिजली घरों इत्यादि का निर्माण अनिवार्य है। परन्तु अल्पविकसित देशों में सामाजिक तथा आर्थिक उपरि-सुविधाओं की अलाभदायकता के कारण निजी उद्यम उनके विकास में रुचि नहीं रखता वह सामाजिक लाभ की बजाय निजी लाभ से प्रेरित होता है। इसलिए योजनाबद्ध ढंग से सामाजिक तथा आर्थिक उपरि पूंजी का निर्माण करने का दायित्व राज्य पर आ पड़ता है।

(5) वित्तीय संस्थाओं का विकास — घरेलू तथा विदेशी व्यापार के विस्तार के लिए ~~सामाजिक~~ वित्तीय संस्थाओं का होना भी आवश्यक है। अल्पविकसित देशों में मुद्रा तथा पूंजी मार्केट अल्पविकसित होते हैं। ये साधन उद्योग तथा व्यापार की वृद्धि में बाधक होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय चक्रीय उतार-चढ़ाव द्वारा उत्पन्न आर्थिक अस्थिरता रहती है। इस अव्यवस्था को केवल राज्य ही अपने योजना प्राधिकरण के द्वारा दूर कर सकती है क्योंकि आर्थिक स्थिरता बनाए रखने के लिए मांग एवं पूर्ति के बीच समायोजन जरूरी होता है।

6. दरिद्रता दूर करने के लिए (For the Removal of Poverty) राष्ट्रों की दरिद्रता दूर करने के लिए हेतू विकास के लिए आयोजना करना अनिवार्य है। राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने के लिए, धन की असमानताएं घटाने के लिए, रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए अल्पविकसित देशों के सामने केवल यही एक मार्ग रहता है कि वे आयोजन करके विकास करें क्योंकि इसमें पूंजी की कमी रहती है।

7. तकनीकी विकास के लिए For technical development- ऐसी अर्थव्यवस्था में तकनीकी ज्ञान एवं कार्यकुशलता की कमी पाई जाती है। जिसके कारण उत्पादन लक्ष्य से कम होता है। अतः तकनीकी पिछड़ेपन को दूर करने के लिए तथा कार्यकुशलता में वृद्धि करने के लिए नियोजन ही एकमात्र अस्त्र होता है।

8. साधनों का उचित उपयोग Proper utilization of resources- अल्पविकसित देशों द्वारा आर्थिक आयोजन अपनाने से साधनों का उचित उपयोग होता है। तकनीकी ज्ञान एवं पूंजी की कमी के कारण प्राकृतिक साधनों एवं मानवीय साधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है। साधनों के उचित उपयोग के लिए निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों का इकट्ठा विकास करना जरूरी होता है।

9. उत्पादन समस्याओं का समाधान Solution of Production problems

Scanned with CamScanner

उत्पादन संबंधी समस्याओं का समाधान आर्थिक नियोजन के अन्तर्गत ही संभव है। अल्पविकसित देशों में बढ़ते हुए जनसंख्या दबाव के कारण उत्पादन लक्ष्यों को निश्चित करना आवश्यक हो जाता है। जो नियोजन द्वारा ही संभव है।

10. आर्थिक सुरक्षा - Economic Security

आर्थिक नियोजन अपनाने से आर्थिक सुरक्षा बढ़ती है। आर्थिक सुरक्षा के अन्तर्गत सरकार शोषण के विरुद्ध कानून बनाना, बीमा योजना, भविष्य निधि योजना पेंशन इत्यादि योजनाएँ लागू करती हैं जिससे कार्यकुशलता के साथ-साथ समाज कल्याण में भी वृद्धि होती है।

इस प्रकार आर्थिक नियोजन अल्पविकसित देश के विकास के लिए एक ऐसा शास्त्र है जिसके बिना उच्च स्तर पर विकास संभव ही नहीं है।

Dr. Sandhya Rani
Dept. of Economics
Maharaja College.

Scanned with CamScanner